रस शास्त्र – 1

ताल सिन्दूर कल्पना

अध्येता : डा. गोपाल लाल शर्मा

निर्देशक : वैद्य लक्ष्मीनारायण शर्मा

1983 : 207

तालसिंदूर का औषध गुणकर्मात्मक अध्ययन एवं कल्पना विधियों का मुख्यतः अध्ययन तथा श्वास रोग पर प्रभावात्मक अध्ययन करना ही महानिबन्ध का उद्देश्य है।

ताल सिंदूर के भिन्न 4 कल्पों का संस्थान रसायनशाला में निर्माण कर प्रत्येक कल्पभेद 10–10 श्वास रुग्णों को 2–2 रत्ती की मात्रा में दिन में दो बार दिया गया।

प्रथम वर्ग में तालसिंदूर (हिंगुलोत्थ पारद बहिर्धूम) का लाभ 40 प्रतिशत, द्वितीय वर्ग में अष्ट संस्कारित पारद बहिर्धूम का लाभ 70 प्रतिशत रुग्णों में, तृतीय वर्ग में हिंगुलोत्थ पारद अन्तर्धूम का लाभ 60 प्रतिशत रुग्णों में तथा चतुर्थ वर्ग में अष्ट संस्कारित पारद अन्तर्धूम का लाभ 90 प्रतिशत रुग्णों में दृष्टिगत हुआ।

ताल सिन्दूर अष्टसंस्कारित पारद अन्तर्धूम कल्पना सर्वोत्कृष्ट प्रतीत होती है।

रस शास्त्र – 2

उदयादित्य रस निर्माण एवं प्रभावात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. गजानन शर्मा

निर्देशक : वैद्य लक्ष्मीनारायण शर्मा

1983 : 150

उदयादित्य रस (रस योग सागर) का निर्माणज्ञान परक अध्ययन तथा श्वित्रकुष्ठ जैसे रोग में इसका प्रभावात्मक ज्ञान ही महानिबन्ध का उद्देश्य है।

उदयादित्य रस का निर्माण रस योग सागर ग्रन्थोक्त विधि से कर संस्थान व सवाई मानसिंह मेडिकल कॉलेज, जयपुर में क्रमशः श्वित्र व Vitiligo के 20 रुग्णों का चयन कर 125 मि.ग्रा. की मात्रा में दिन में दो बार सामान्य शोधन कर अपामार्ग, बाकुची चूर्ण से 40 दिन तक दिया गया।

श्वित्र के वर्ण, आकारगत प्रभाव में 20 प्रतिशत रुग्णों को पूर्ण लाभ, 40 प्रतिशत को अल्पलाभ तथा 40 प्रतिशत को कोई लाभ नहीं हुआ।

रस शास्त्र – 3

धात्री–तिल भृंगराज क्षोद (अनुसंधानात्मक अध्ययन)

अध्येता : डा. संतोष कुमार

निर्देशक : वैद्य लक्ष्मीनारायण शर्मा

1983 : 214

अल्पायु में श्वेत केश अथवा केशपातन विचारणीय होने से आयुर्वेदीय भृंगराज क्षोद एवं धात्री–तिल की फलश्रुतियों का रसशास्त्रीय अध्ययन ही महानिबन्ध का उद्देश्य है।

श्वेत केश एवं केशपातन के 57 रुग्णों में से 28 को भावनायुक्त क्षोद प्रयोग, 21 को सामान्य क्षोद प्रयोग, 1 को 12 ग्राम के मोदक की मात्रा में रात्रि में सोते समय आभ्यंतर प्रयोग कराया गया।

भावनायुक्त क्षोद से 28 में से 21, 42 प्रतिशत रुग्णों में पिंजर केशवर्णता एवं 46.42 प्रतिशत में केशपातन पहले की अपेक्षा कम हुआ।

सामान्य क्षोद से 33.34 प्रतिशत रुग्णों में अल्प मात्रा में पिंजरवर्णता प्राप्त हुई।

मोदक कल्पना निर्दिष्ट समय तक रोगी द्वारा न लिए जाने से लाभ निर्देश कठिन है।

भावनायुक्त भृंगराज (धात्री–तिल) का लाभ अधिक देखा गया।

रस शास्त्र – 4

अष्ट संस्कारित एवं हिंगुलोत्थ पारद का तुलनात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. मुनीश्वर दयाल

निर्देशक : वैद्य लक्ष्मीनारायण शर्मा

1983 : 192

हिंगुलोत्थ पारद व अष्ट संस्कारित पारद द्वारा पृथक्–पृथक् रसपर्पटी बनाकर ग्रहणी रोगियों में समान निर्देश से दी जाकर लाभालाभ का तुलनात्मक अध्ययन किया गया।

आतुरवृत्तपत्रक के आधार पर दो वर्गों में 11–11 रुग्णों का चयन कर, पहले वर्ग को अष्टसंस्कारित पारद से निर्मित रस पर्पटी का प्रयोग एवं दूसरे वर्ग में हिंगुलोत्थ पारद निर्मित रस पर्पटी का प्रयोग दो रत्ती से प्रारम्भ कर अवरोही क्रम से कुल 2 तोला 8 माशा की मात्रा 40 दिन में पर्पटी कल्प विधि द्वारा सहपान शहद एवं भुने जीरे के साथ कराया गया, साथ में दधि की वृद्धिगत मात्रा दी गयी।

अष्ट संस्कारित पारद निर्मित पर्पटी से 72.66 प्रतिशत रुग्णों में लाभ हुआ जबकि सामान्य हिंगुलोत्थ पर्पटी से 59.09 प्रतिशत रुग्णों में लाभ हुआ, अष्ट संस्कारित पारद निर्मित पर्पटी के गुण उत्कृष्ट हैं।

रस शास्त्र – 5

गंधक शोधन की विधियों का तुलनात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. बिसौहाप्रसाद ताम्रकार

निर्देशक : वैद्य लक्ष्मीनारायण शर्मा

1983 : 190

गंधक की अनेक रोगों एवं योगों में कार्मुकता को देखते हुये इसकी शोधन विधियों का तुलनात्मक एवं प्रभावात्मक अध्ययन ही महानिबन्ध का उद्देय है।

विषमाग्नि एवं मन्दाग्नि के 42 रोगियों का लाक्षणिक आधार पर चयन कर 6 वर्गों में 7–7 रोगियों को गंधक के विभिन्न प्रयोग निम्न क्रम से करवाये गये।

प्रथम वर्ग में सुगन्धि योग प्रथम – 250 मि.ग्रा. x 2 बार, जल से

द्वितीय वर्ग में सुगन्धि योग द्वितीय – 250 मि.ग्रा. x 2 बार, जल से

तृतीय वर्ग में लेलीतक योग – 250 मि.ग्रा. x 2 बार, जल से

चतुर्थ वर्ग में पामारि योग – 250 मि.ग्रा. x 2 बार, जल से

पंचम् वर्ग में नवनीतक योग – 250 मि.ग्रा. x 2 बार, जल से

षष्ठम् वर्ग में गंधेश योग – 250 मि.ग्रा. x 2 बार, जल से

सभी वर्गों में 7–7 रोगी लिये तथा सभी को 21 दिन तक औषध प्रयोग कराया गया।

प्रथम वर्ग में 2 को लाभ, 4 को अल्प लाभ, 1 को अलाभ

द्वितीय वर्ग में 2 को लाभ, 3 को अल्प लाभ, 2 को अलाभ

तृतीय वर्ग में 2 को लाभ, 4 को अल्प लाभ, 1 को अलाभ

चतुर्थ वर्ग में 2 को लाभ, 4 को अल्प लाभ, 1 को अलाभ

पंचम् वर्ग में 0 को लाभ, 2 को अल्प लाभ, 5 को अलाभ

षष्ठम् वर्ग में 2 को लाभ, 1 को अल्प लाभ, 4 को अलाभ

प्रथम 4 परिकल्पनायें गंधक की अधिक प्रभावी प्रतीत होती है।

रस शास्त्र – 6

सोमनाथी ताम्र एवं ताम्र भस्म का तुलनात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. पुरन्जय शर्मा

निर्देशक : प्रो. लक्ष्मीनारायण शर्मा

1985 : 164

सप्तलौहादि धातुओं के अन्तर्गत ताम्र वैशिष्ट्य के विशिष्ट कल्पों का रस शास्त्रीय अध्ययन ही महानिबन्ध का उद्देश्य है।

सोमनाथी विधि से ताम्र भस्म का निर्माण कर आतुरवृत्तपत्रकानुसार 10 तमक श्वास रुग्णों को चयनित कर 1 से 2 रत्ती की मात्रा में मधु के साथ 14 दिन प्रयोग किया गया।

सामान्य ताम्र भस्म का पाण्डु रोग के 6 आतुरों पर 1 से 2 रत्ती की मात्रा में 14 दिन तक मधु के साथ प्रयोग कराया गया।

श्वास रुग्णों में प्रथम कल्प का लाभ 50–75 प्रतिशत तक रहा।

द्वितीय कल्प के पाण्डु रुग्णों में 46 प्रतिशत की वृद्धि में विशेष प्रभाव परिलक्षित नहीं हुआ। पाण्डु रुग्णों पर पुनः सोमनाथी ताम्र का प्रयोग उक्त विधि के बाद रुग्णों पर किया जिससे 46 प्रतिशत में 1.5 ग्राम तक वृद्धयात्मक प्रभाव हुआ।

रस शास्त्र – 7

कुंकुमादि तैल कल्प का भैषज्य कल्पनात्मक अध्ययन एवं भैषजीय मानकीकरण

अध्येता : डा. मुरारी लाल शर्मा

निर्देशक : प्रो. लक्ष्मीनारायण शर्मा

1985 : 180

क्षुद्र रोगों में सौन्दर्य प्रसाधनों का आयुर्वेदिक भैषजीय अध्ययन एवं कल्पना का मानकीकरण ही महानिबन्ध का उद्देश्य है।

व्यंग व्याधि में प्रभूत लक्षणों वाले 100 रोगी लिये गये, जिन्हें 10–10 रोगियों के 10 वर्गों में विभक्त कर कुंकुमादि तैल के 10 भिन्न कल्पों का प्रयोग कराया गया। प्रयोग काल–रात्रि में शयन पूर्व, प्रातः स्नान पूर्व बाह्य प्रलेप के रूप में 4 सप्ताह तक किया गया।

कल्प 1 से 50 प्रतिशत लाभ, 2 से 100 प्रतिशत लाभ,

3 से 50–75 प्रतिशत लाभ, 4 से 75–100 प्रतिशत लाभ,

5 से 75–100 प्रतिशत लाभ, 6 से 50–75 प्रतिशत लाभ,

7 से 25–50 प्रतिशत लाभ, 8 से 100 प्रतिशत लाभ,

9 से 75–100 प्रतिशत लाभ तथा 10वें

कल्प से 50–75 प्रतिशत लाभ अंकित किया गया।

रस शास्त्र – 8

कृष्णाञ्जन विवेचन एवं विभिन्न कल्पनायें

अध्येता : डा. केदार प्रसाद शर्मा

निर्देशक : प्रो. लक्ष्मीनारायण शर्मा

1985 : 157

कृष्णाञ्जन की संदिग्धता निवारण एवं विविध कल्पों का प्रायोगिक अध्ययन ही महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

कृष्णाञ्जन से नेत्र प्रभाकर अञ्जन, नयनामृत अञ्जन, कृष्णाञ्जन लेप, रोपण मलहर व कृष्णाञ्जनवटी बनाकर विभिन्न प्रयोग किये।

नेत्रप्रभाकर अञ्जन का प्रयोग 40 तिमिर रोगियों में, नयनामृत अञ्जन 35 तिमिर रोगियों में, कृष्णाञ्जन लेप श्वित्र के 10 रुग्णों में (बाह्य प्रयोग), रोपण मलहर का व्रण के 10 रोगियों में, कृष्णाञ्जनवटी का प्रयोग अर्श के 10 रोगियों में किया गया।

नेत्र प्रभाकर से 40 में से 19 को पूर्ण लाभ, 12 को सामान्य लाभ व 9 को अलाभ रहा।

नयनामृत से 14 को पूर्ण, 13 को सामान्य, 8 को अलाभ ।

कृष्णाञ्जन लेप से 1 को लाभ, 7 को सामान्य, 2 को कोई लाभ नहीं रहा।

रोपण मलहर से 8 को लाभ, 1 को सामान्य, 1 को अलाभ ।

कृष्णाञ्जन वटी से 4 को लाभ, 4 को सामान्य लाभ तथा 2 को अलाभ रहा।

रस शास्त्र – 9

रसकर्पूर कल्प विज्ञान (अष्ट संस्कारित एवं हिंगुलोत्थ पारद से रसकर्पूर निर्माण परिज्ञान व प्रभावात्मक अध्ययन)

अध्येता	:	डा. रामकृष्ण अंगिरस
निर्देशक	:	प्रो. लक्ष्मीनारायण शर्मा
1985	:	204

रस कर्पूर के दो भिन्न कल्पों का तुलनात्मक प्रभावात्मक अध्ययन एवं निर्माणात्मक विशिष्ठ का परिज्ञान ही महानिबन्ध का उद्देश्य है।

प्रथम अष्ट संस्कारित पारद से निर्मित रसकर्पूर कल्प को उपदंश के 6 रोगियों पर बाह्य प्रयोग किया गया।

द्वितीय रस कर्पूर कल्प को हिंगुलोत्थ पारद से (मन्दाग्नि ताप) निर्मित कर नाड़ी व्रण के 6 रोगियों पर बाह्य प्रयोग किया गया।

तृतीय अष्ट संस्कारित पारद + गंधकाम्ल से निर्मित रसकर्पूर कल्प का प्रयोग 6 नाड़ी व्रण रोगियों पर बाह्य प्रयोग किया गया।

चतुर्थ हिंगुलोत्थ पारद (तीव्राग्नि ताप) से निर्मित रसकर्पूर कल्प को जीर्ण दद्रु के 6 रोगियों पर बाह्य प्रयोग किया।

प्रथम कल्प से 88.75 प्रतिशत लाभ, द्वितीय कल्प से 84.61 प्रतिशत लाभ, तृतीय कल्प से 89.24 प्रतिशत लाभ तथा चतुर्थ कल्प से 86.25 प्रतिशत लाभ रहा । इस दृष्टि से चारों कल्पों में निर्माण में भेद होते हुए भी प्रभाव दृष्ट्या विशेष अन्तर प्रतीत नहीं होता।

रस शास्त्र – 10

अभ्र भस्म एवं अभ्र सत्व भस्म का तुलनात्मक अध्ययन (लक्ष्मीविलास रस के परिप्रेक्ष्य में)

अध्येता : डा. राम अजोर शुक्ला

निर्देशक : प्रो. लक्ष्मीनारायण शर्मा

1985 : 189

विभागीय औषध कल्पनाओं के अन्तर्गत अभ्र भस्म कल्पनाओं को प्रयोगतः सत्यापित करना ही महानिबंध का उद्देश्य है।

कास रोग के इतिवृत्तात्मक आधार पर लक्ष्मीविलास रस की अ, ब, स और द इन 4 कल्पनाओं का प्रयोग कराया प्रत्येक की 250 मि.ग्रा. की 2 मात्रायें सुखोष्ण जल से 21 दिन तक 40 रोगियों में प्रयुक्त की।

अ वर्ग में अभ्र भस्म तथा अष्ट संस्कारित पारद से निर्मित लक्ष्मीविलास रस का लाभ 90.90 प्रतिशत रोगियों में रहा,

ब वर्ग में अभ्र भस्म तथा हिंगुलोत्थ पारद से निर्मित लक्ष्मीविलास रस का लाभ 70 प्रतिशत हुआ।

स वर्ग में अभ्र सत्व भस्म व अष्टसंस्कारित पारद से निर्मित लक्ष्मीविलास रस का प्रभाव 91.70 प्रतिशत आतुरों में हुआ।

द वर्ग में अभ्र सत्व भस्म व हिंगुलोत्थ पारद निर्मित लक्ष्मीविलास रस का प्रभाव 80 प्रतिशत रोगियों में परिलक्षित हुआ।

रस शास्त्र – 11

भल्लातक की विभिन्न कल्पनायें (निर्माणात्मक एवं प्रभावात्मक अध्ययन)

अध्येता : डा. नन्द बिहारी शर्मा

निर्देशक : प्रो. लक्ष्मीनारायण शर्मा

1986 : 151+13

भल्लातक की रसायन गुणता का विभिन्न कल्पनाओं के संदर्भ में प्रायोगिक अध्ययन एवं निर्माणात्मक अध्ययन ही महानिबन्ध का उद्देश्य है।

भल्लातक के अमृत भल्लातक, भल्लातकादि मंजन एवं भल्लातक तैल के रूप में निर्माण किया गया।

भल्लातक तैल का प्रयोग – नाड़ी व्रण के 5 रोगियों में बाह्य लेप व व्रण बंधनार्थ किया गया, जिसमें 15 दिन के प्रयोग से पूयोद्गम व स्त्राव में 60 प्रतिशत लाभ, शोथ में 80 प्रतिशत व शूल में 40 प्रतिशत लाभ हुआ।

भल्लातकादि मंजन का प्रयोग दन्तवेष्ठ के 5 रोगियों में किया गया, जिससे पूयोद्गम, स्राव तथा शूल में 40 प्रतिशत लाभ हुआ।

अमृत भल्लातक का प्रयोग 10 ग्राम प्रतिदिन दूध से दौर्बल्य व वात वृद्धि लक्षण युक्त 10 रोगियों में रसायन के रूप में किया गया। जिससे दुर्बलता, विबंध, भ्रम, तमोदर्शन, अग्निमांद्य व रौक्ष्य में 40 प्रतिशत लाभ हुआ। किन्तु 5 रोगियों में कण्डू, शोथ एवं पिड़िका होने से औषध प्रयोग बन्द करना पड़ा।

रस शास्त्र – 12

हरताल सत्व की विविध प्रक्रियायें एवं मानकीकरण

अध्येता : डा. गिरिराज मिश्रा

निर्देशक : प्रो. लक्ष्मीनारायण शर्मा

1986 : 189

हरताल सत्व की विविध निर्माणात्मक प्रक्रियाओं का श्वास रोग पर प्रायोगिक प्रभावात्मक अध्ययन द्वारा मानकीकरण ही महानिबंध का मुख्य उद्देश्य है।

आयुर्वेदीय निदान पत्रक व आतुर पत्रक के आधार पर 20 तमक श्वास रोगियों का चयन कर हरताल सत्व का 15–15 मि.ग्रा. की 2 मात्रा व पिप्पली चूर्ण 3–3 ग्राम शहद से 15 दिन तक प्रयोग किया गया।

हरताल सत्व अर्क क्षीर व तिल तैल की कूपी पक्व विधि द्वारा अधिक मात्रा में प्राप्त किया जा सकता है।

ग्रीवा व शिरोजाड्य में प्रयोग से 100 प्रतिशत लाभ रहा, पीनस में भी 100 प्रतिशत लाभ रहा, घुर्घरक ध्वनि, कास, श्वास वेगाधिक्य में 60 प्रतिशत लाभ रहा।

रस शास्त्र – 13

विशिष्ट स्नेह कल्पनाओं का निर्माणात्मक एवं प्रभावात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. संतोष कुमार शर्मा

निर्देशक : प्रो. लक्ष्मीनारायण शर्मा

1986 : 216

स्नेह कल्पनाओं के अन्तर्गत विभिन्न कल्पनाओं में से कतिपय विशिष्ट कल्पनाओं का निर्माणात्मक एवं प्रभावात्मक अध्ययन ही महानिबंध का उद्देश्य है।

जीर्ण प्रतिश्याय के 60 रोगियों का चयन कर उन्हें अणु तैल की 3 कल्पनाओं का नासा मार्ग से बाह्य प्रयोग कराया गया।

अ वर्ग में 20 रोगियों में अणु तैल (मृदुपाक) का प्रयोग

ब वर्ग में 20 रोगियों को अणु तैल (मध्यम पाक) का प्रयोग

स वर्ग में 20 रोगियों में अणु तैल (खरपाक) का प्रयोग

दूसरे प्रयोग के रूप में दाड़िमाद्यघृत की तीन मिश्र कल्पनाओं का 46 पाण्डु रोगियों को प्रयोग कराया गया।

अ वर्ग में 20 रोगियों को दाड़िमाद्यघृत (मृदु पाक) 20 मि.लि.

ब वर्ग में 20 रोगियों को दाड़िमाद्यघृत (मध्यम पाक) 20 मि.लि.

स वर्ग में 6 रोगियों को दाड़िमाद्यघृत (खर पाक) 20 मि.लि.

प्रतिश्याय में अणुतैल मृदु पाक का उत्तम लाभ होता है, दाड़िमाद्यघृत मृदुपाक का लाभ दाड़िमाद्य अवलेह (पूर्व निर्मित एवं प्रयुक्त) का लाभ अपेक्षाकृत अधिक प्रभावी है। मृदुपाक स्नेह कल्पना में अधिक प्रभावी परिलक्षित होता है।

रस शास्त्र – 14

भेषज निर्माणशालोपयोगी प्राचीनार्वाचीन यन्त्रोपकरणों का समीक्षात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. रमाकान्त शर्मा

निर्देशक : प्रो. लक्ष्मीनारायण शर्मा

1986 : 216

महानिबंध का उद्देश्य वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक रसायनशाला में औषध निर्माण यंत्रोपकरणों के प्रयोग का समीक्षात्मक अध्ययन रहा है।

क– वैदिक काल में उलूखल, स्थाली, सूप, घट आदि यन्त्रोपस्कर प्रयुक्त होते थे उनका सचित्र प्रासंगिक उपयोगिता का संदर्भ सहित वर्णन किया गया है।

ख– संहिता काल में उक्त यंत्रों के अतिरिक्त मूषा, दर्विका आदि का वर्णन उपलब्ध है इसके अतिरिक्त भी अन्य लघु उपकरणों के प्रयोग का इतिहास परक व उपयोग परक सचित्र ससन्दर्भ वर्णन किया गया है।

ग– मध्यम काल में रस शास्त्रीय ग्रन्थों के उद्भव व विकास के साथ ही यंत्रोपकरणों का विस्तृत उल्लेख हुआ है जिसका विस्तार से वर्णन अध्येता ने किया है।

घ– आधुनिक काल में आयुर्वेद प्रकाश, वृहद् रसराजसुन्दर, रसेन्द्र पुराण तथा रसतरंगिणी आदि ग्रन्थों में उपलब्ध सभी यंत्र तथा आधुनिक स्वचालित मशीनों का सविस्तार वर्णन अध्येता ने किया है।

साथ ही अध्येता ने रसशाला के भवन निर्माण, भट्टी निर्माण, मूषा निर्माण, रस मण्डप का विस्तार से वर्णन करते हुये रसशाला कर्मचारियों की कार्य विभाजन व्यवस्था का भी उल्लेख किया है।

अध्येता ने अपने अध्ययन में रसशाला उपयोगी 101 यंत्रोपकरणों का वर्णन किया है, जो 25 ग्रन्थों से संकलित किया गया है।

रस शास्त्र – 15

त्रिवंगभस्म का निर्माणात्मक एवं प्रभावात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. रामकिशोर पाण्डे

निर्देशक : प्रो. लक्ष्मीनारायण शर्मा

1987 : 188

त्रिवंगभस्म की विभिन्न निर्माणात्मक विधियों का शुक्रमेह के परिप्रेक्ष्य में प्रभावात्मक अध्ययन ही महानिबंध का उद्देश्य है।

आयुर्वेदीय परीक्षा सिद्धान्तों के आधार पर 20 शुक्रमेह आतुरों का चयन कर दो वर्ग बनाये गये ।

अ वर्ग में त्रिवंगभस्म (कूपीपक्व) 250 मि.ग्रा. x 2

21 दिन तक शहद से दी गयी। (12 आतुरों पर)

ब वर्ग में त्रिवंगभस्म (पुटपक्व) 250 मि.ग्रा. x 2

21 दिन तक शहद से प्रयोग किया। (8 आतुरों पर)

मलावरोध दूर करने के लिये त्रिफला चूर्ण 3 ग्राम रात्रि में दिया गया।

अ वर्ग में कूपीपक्व भस्म का परिणाम शुक्राभ/शुक्रमिश्रित मूत्र में 8 आतुरों में 77.27 प्रतिशत लाभ रहा।

ब वर्ग में पुटपक्व भस्म का लाभ 76.66 प्रतिशत रहा।

दोनों विधियों से निर्मित त्रिवंगभस्म के प्रभाव में विशेष अन्तर परिलक्षित नहीं हुआ।

रस शास्त्र – 16

मेध्य रसायन मण्डूकपर्णी–भैषज्य कल्पनात्मक एवं प्रभावात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. विजय शंकर गुप्त

निर्देशक : प्रो. लक्ष्मीनारायण शर्मा

1987 : 205

ब्राह्मी व मण्डूकपर्णी के ऐतिह्य प्रमाण के आधार का विश्लेषण एवं मेध्य प्रभावात्मक अध्ययन ही महानिबंध का उद्देश्य है।

यदृच्छा निदर्शन विधि से 50 रोगियों को स्मृति, मेधा ह्रास के लक्षणों के आधार पर चयनित कर 10–10 रोगियों के 5 वर्गों में विभिन्न प्रयोग 60 दिन तक किये गये।

क वर्ग में मण्डूकपर्णी स्वरस 24 मि.लि. x 2 बार

ख वर्ग में मण्डूकपर्णी चूर्ण 5 ग्राम x 2 बार

ग वर्ग में मण्डूकपर्णी हिम 48 मि.लि. x 2 बार

घ वर्ग में मण्डूकपर्णी शार्कर 25 मि.लि. x 2 बार

ङ वर्ग में मण्डूकपर्णी घृत 10 मि.लि. x 2 बार

सभी वर्गों में 60 दिन तक 2 बार प्रतिदिन सेवन कराया गया।

मण्डूकपर्णी स्वरस से रसायन गुणोपलब्धि 71.13 प्रतिशत, चूर्ण से 36.88 प्रतिशत, हिम से 47.61 प्रतिशत, शार्कर से 14.60 प्रतिशत तथा मण्डूकपर्णीघृत से रसायन गुणोपलब्धि 52.96 प्रतिशत रही।

सभी भैषज्य कल्पनाओं की अपेक्षा स्वरस कल्पना श्रेयस्कर है।

रस शास्त्र – 17

श्वेत ताम्र भस्म व ताम्र भस्म की सापेक्ष निर्माण प्रक्रिया

अध्येता : डा. महेश चन्द्र शर्मा

निर्देशक : प्रो. लक्ष्मीनारायण शर्मा

1987 : 173

देह वेध व लौह वेध के लिये ताम्र का उपयोग आदिकाल से चला आ रहा है, सर्वरोग नाशक ताम्र का प्रायोगिक अध्ययन ही महानिबंध का उद्देश्य है।

ग्राह्याग्राह्य की दृष्टि से नेपाली ताम्र श्रेष्ठ है। प्रायोगिक अध्ययनार्थ ताम्र का सामान्य व विशेष शोधन कर श्वेत ताम्र भस्म निर्माण की 11 विधियों का उपयोग करने के पश्चात् भी अध्येता के अनुसार श्वेत ताम्र भस्म का निर्माण सम्भव नहीं हो पाया। अतः प्रायोगिक अध्ययन की आधारभूत औषध के तैयार न होने की स्थिति में अग्रिम प्रक्रिया प्रारम्भ नहीं हो पायी।

निष्कर्ष रूप से अध्येता ने लिखा है कि महानिबंध में औषधि निर्माण सिद्धान्तों का पूर्ण पालन करने पर भी श्वेत ताम्र भस्म नहीं बन सकी।

रस शास्त्र – 18

शिशु चिकित्सोपयोगी प्रमुख भैषज्य कल्पनायें: निर्माणात्मक एवं प्रभावात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. वेदवती शर्मा

निर्देशक : प्रो. लक्ष्मीनारायण शर्मा

सह निर्देशक : डा. वेद प्रकाश शर्मा

1987 : 240

आयुर्वेदीय औषधियों की विभिन्न कल्पनाओं की गुणवत्ता संरक्षित रखते हुये शिशुओं में प्रयोग सुगमता, स्वादयुक्त अल्पमात्रा में औषधि कल्पनाओं का अनुसन्धान ही महानिबंध का उद्देश्य है।

शिशु स्वास्थ्य संरक्षण एवं चिकित्सा विज्ञानीय के अतिरिक्त जन्मघुट्टी, बालचातुर्भद्रिका, कुमार कल्याण रस, दन्तोद्भेदगदान्तक रस तथा अरविन्दासव की घटक दृष्ट्या कार्मुकता का वर्णन किया गया है।

अध्येत्री ने बाल रोगों का विशिष्ट आतुरवृत्त पत्रक बनाकर 81 शिशु रोगियों का चयन कर उनमें विभिन्न कल्पनाओं का 20 दिन तक प्रयोग किया।

बालचातुर्भद्र अर्क की अपेक्षा शार्कर अधिक प्रभावी रहा। जन्मघुट्टी के विभिन्न कल्पों में घन सत्व का लाभ 94.22 प्रतिशत रहा, जबकि–अर्क शार्कर का प्रभाव 70.2 प्रतिशत रहा। दन्तोद्भेदगदान्तक रस ही अन्य कल्पनाओं की अपेक्षा अधिक उपयोगी रहा।

10 शिशु रोगोपयोगी औषधियों का निर्माण 4 प्रयोग अध्येत्री ने किये हैं।

रस शास्त्र – 19

रौप्यमालिनी बसन्त का निर्माणात्मक एवं प्रभावात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. नागेन्द्र कुमार पाण्डेय

निर्देशक : प्रो. लक्ष्मीनारायण शर्मा

1988 :

स्वर्ण बसन्त मालती में स्वर्ण के स्थान पर रौप्य (रजत) का प्रयोग कर निर्माणात्मक एवं प्रभावात्मक अध्ययन ही महानिबंध का उद्देश्य है।

आयुर्वेदीय रोग निदान प्रक्रिया के आधार पर 40 जीर्ण ज्वर रोगियों का चयन किया गया।

रौप्यमालिनी बसन्त–मुक्तापिष्टी, शुद्ध हिंगुल, रौप्य भस्म, यशद भस्म तथा श्वेत मरिच चूर्ण द्वारा तैयार किया गया।

रौप्यमालिनी बसन्त 2–2 रत्ती की 2 मात्रा शहद से 21 दिन तक प्रयुक्त की।

इससे भी 70.4 प्रतिशत आतुरों में लाभ, अल्प लाभ 22.2 प्रतिशत आतुरों में तथा 7.4 प्रतिशत आतुरों में कोई लाभ नहीं रहा। साथ ही स्वर्ण बसन्त मालती का प्रयोग व तुलनात्मक अध्ययन अध्येता ने नहीं किया है।

रस शास्त्र – 20

प्रवाल पिष्टी का निर्माणात्मक एवं प्रभावात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. निर्मल कुमार खण्डेलवाल

निर्देशक : प्रो. लक्ष्मीनारायण शर्मा

1988 : 168

प्रवाल मूल एवं प्रवाल शाखा से निर्मित प्रवाल पिष्टी में साधर्म्य वैधर्म्य तथा तुलनात्मक चिकित्सा दृष्ट्या अध्ययन ही महानिबंध का उद्देश्य है।

अम्लपित्त के 18 रोगियों का शास्त्रीय आधारों पर चयन कर दो वर्ग बनाये गये।

अ वर्ग में 10 आतुरों को प्रवाल शाखा पिष्टी 500 मि.ग्रा. x 2 x 30 दिन प्रयुक्त की।

ब वर्ग में समान मात्रा व अवधि तक 8 रोगियों में प्रवाल मूल पिष्टी का प्रयोग किया।

अ वर्ग में उरोदाह में 86.6 प्रतिशत, कण्ठदाह में 75 प्रतिशत, अम्लोत्क्लेश में 68 प्रतिशत, तिक्तोद्गार में 66.6 प्रतिशत, अविपाक में 60 प्रतिशत लाभ रहा। औसत कुल लाभ 60.5 प्रतिशत अंकित किया गया।

प्रवाल मूल पिष्टी का ब वर्ग के रोगियों में उरोदाह में 76.2 प्रतिशत, अम्लोत्क्लेश में 63.6 प्रतिशत, अरूचि में 66.7 प्रतिशत, कण्ठदाह में 62.5 प्रतिशत तथा कुल औसत लाभ 13 लक्षणों में 54.2 प्रतिशत रहा।

प्रवाल मूल पिष्टी की अपेक्षा प्रवाल शाखा पिष्टी अधिक प्रभावी है।

रस शास्त्र – 21

हृदयेश्वर रस का निर्माणात्मक एवं प्रभाव ज्ञानात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. श्यामनारायण शर्मा

निर्देशक : प्रो. लक्ष्मीनारायण शर्मा

1988 :

हृद्रोगों में प्रभावी सद्यः कार्मुक आयुर्वेदीय औषधि का अध्ययन ही विषय चयन का हेतु है।

विस्तृत आतुरवृत्त पत्रक, आधुनिक प्रयोगशालीय परीक्षण, ECG तथा रक्तचाप अंकन के द्वारा हृद्रोग के 27 आतुरों का चयन कर 2 वर्ग बनाये गये।

अ वर्ग में हृदयेश्वर रस 250 मि.ग्रा. X पार्थाद्य घृत 10–10 मि.लि. X 2 X 30 दिन तक 14 आतुरों में प्रयुक्त किया।

ब वर्ग में हृदयेश्वर रस 250 मि.ग्रा. X 2 X 30 दिन तक 13 आतुरों में दिया गया।

अ वर्ग में 50 प्रतिशत आतुरों को पूर्ण लाभ, 35 प्रतिशत को अल्प लाभ व 15 प्रतिशत को लाभ नहीं रहा।

ब वर्ग में 16.66 प्रतिशत को पूर्ण लाभ, 76.60 प्रतिशत आतुरों को अल्प लाभ व शेष को लाभ नहीं रहा।

रस शास्त्र – 22

मेध्य रसायन शंखपुष्पी–भैषज्य कल्पनात्मक एवं प्रभावात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. अशोक बाबू शर्मा

निर्देशक : प्रो. लक्ष्मीनारायण शर्मा

1988 : 183

शंखपुष्पी के विभिन्न कल्पों का भैषज्य कल्पना दृष्ट्या निर्माण कर प्रभाव ज्ञानात्मक अध्ययन ही महानिबंध का उद्देश्य है।

प्रश्न पत्र के आधार पर अल्प मेधा वाले 62 रोगियों पर विभिन्न शंखपुष्पी कल्पनाओं के निम्न क्रम से प्रयोग किये।

1– शंखपुष्पी कल्क का प्रयोग 13 रोगियों में

2– शंखपुष्पी हिम का प्रयोग 17 रोगियों में

3– शंखपुष्पी शार्कर का प्रयोग 26 रोगियों में

4– शंखपुष्पी घृत का प्रयोग 16 रोगियों में

मेध्य रसायन की दृष्टि से शंखपुष्पी कल्क के परिणाम सर्वोत्तम रहे, द्वितीय कल्प के रूप में शंखपुष्पी घृत का प्रयोग उत्तम रहा, शार्कर एवं हिम कल्पना का लाभ न्यूनतम होता है।

अध्येता ने प्रयोग मात्रा अवधि तथा लाभालाभ के आधार स्पष्ट वर्णित नहीं किये हैं।

रस शास्त्र – 23

संधान–कल्पना का समीक्षात्मक अध्ययन (मद्य कल्प संधान विधान एवं भैषजिक मानकीकरण के परिप्रेक्ष्य में)

अध्येता : डा. ओम प्रकाश शर्मा

निर्देशक : प्रो. लक्ष्मीनारायण शर्मा

सहनिर्देशक डा. लक्ष्मीकान्त द्विवेदी

1989 : 226+3

संधान कल्पना पर विशेष रूप से कोई कार्य नहीं होने से अध्येता को इस विषय में शोध करने की जिज्ञासा हुई।

संधान कल्पना का समीक्षात्मक अध्ययन करते हुए अश्वगंधारिष्ट के घटकों का साहित्यिक विवेचन किया गया है। अश्वगंधारिष्ट के दो कल्प प्रथम मधु योग से व दूसरा गुड़ योग से बनाया गया। इन्हें पक्षाघात के 9–9 रुग्णों के दो वर्ग बनाकर 20–20 मि.लि. दिन में दो बार 40 दिन तक दिया गया।

अश्वगंधारिष्ट का औसत लाभ 72.2 प्रतिशत रहा किन्तु मधु प्रधान अश्वगंधारिष्ट का लाभ अपेक्षाकृत अधिक रहा।

रस शास्त्र – 24

शोणितार्गल रस का निर्माणात्मक एवं असृग्दर पर प्रभावात्मक अध्ययन

अध्येता	:	डा. पुनीता शर्मा
निर्देशक	:	प्रो. लक्ष्मीनारायण शर्मा
सह निर्देशक	:	डा. संतोष कुमार मिश्रा
1989	:	225+5

असृग्दर रोग की बहुतायत व कष्टप्रद होने से अध्येत्री ने इसे शोध कार्य हेतु चयनित किया।

आतुरवृत्त पत्रकानुसार जिसमें एच.बी., बी.टी., सी.टी. आदि परीक्षण सम्मिलित थे, 20 रुग्णाओं का चयन किया गया व शोणितार्गल रस (रसतन्त्रसार व सिद्ध प्रयोग संग्रह) की 125–125 मि.ग्रा. की दो–दो गोलियों को प्रातः सायं दो बार पीपल पत्र स्वरस से दो माह तक दिया गया।

80 प्रतिशत रुग्णाओं को उत्तम लाभ (75–100 तक लक्षणोपशमन)

15 प्रतिशत रुग्णाओं को मध्यम लाभ (50 से 74 प्रतिशत तक लक्षणोपशमन)

5 प्रतिशत रुग्णाओं को अलाभ रहा (25 प्रतिशत से न्यून लक्षणोपशमन)

रस शास्त्र – 25

क्षारकल्पना – एक अध्ययन (मानकीकरण एवं मूत्रलकर्म के परिप्रेक्ष्य में)

अध्येता : डा. चन्द्र मोहन पाराशर

निर्देशक : प्रो. लक्ष्मीनारायण शर्मा

सह निर्देशक : डा. लक्ष्मीकान्त द्विवेदी

1989 : 242

क्षार कल्पना का निर्माणात्मक, मूत्रल प्रभावात्मक एवं मानकीकरण का अध्ययन ही महानिबंध का उद्देश्य है।

भैषज्य कल्पना के सिद्धान्तों के आधार पर अर्क, पुनर्नवामूल, गोक्षुर, अपामार्ग, कण्टकारी, कमलनाल एवं वासा का चतुर्गुण एवं षड्गुण जलादान प्रमाण के आधार पर 3–3 विधियों द्वारा क्षार निर्माण किया गया। भस्म की जल विलेयता एवं पी.एच. का मापन ही क्षार प्रतिशतता ज्ञान का आधार रहा।

मूत्रल प्रभाव के ज्ञानार्थ 6 भिन्न वर्गों में स्वस्थ अध्येताओं पर समान परिस्थिति एवं समान आहार देकर प्रयोग पूर्व मूत्र की सामान्य मात्रा का पूर्व अंकन करके 6 ग्राम क्षार प्रतिदिन 3 मात्रा में दिया गया।

क्षार प्रयोग से अधिकतम मूत्रवृद्धि 800 मि.लि. प्रतिदिन तक रही है। यह वृद्धि 7 दिन पश्चात् से देखी गयी।

रस शास्त्र – 26

गंधक तैल निर्माण एवं प्रभावात्मक अध्ययन (क्षुद्र कुष्ठ के परिप्रेक्ष्य में)

अध्येता : डा. गजानन्द शर्मा

निर्देशक : प्रो. लक्ष्मीनारायण शर्मा

सह–निर्देशक : डा. सन्तोष कुमार मिश्रा

1990 : 158

गन्धक तैल की विभिन्न निर्माणात्मक विधियों का प्रायोगिक ज्ञान एवं निर्मित तैल का क्षुद्रकुष्ठ पर प्रभावात्मक ज्ञान ही महानिबंध का उद्देश्य है।

3 विधियों से गन्धक तैल निर्माण किया गया जिसमें पाताल यन्त्र के माध्यम से निर्मित गंधक तैल अधिक व्यय साध्य होता है जबकि पाताल यन्त्र की घट संधि को 6 से 12 इंच लम्बा कर दिया जाये तो तैल निर्माण व्यय कम हो जाता है।

शास्त्रीय लक्षणों के आधार पर विभिन्न क्षुद्रकुष्ठ के 30 रोगियों का चयन किया गया, गन्धक तैल प्रथम का उपयोग विचर्चिका में, द्वितीय का दद्रु में, तृतीय का पामा रोग में किया गया।

गन्धक तैल प्रथम का विचर्चिका पर 14 आतुरों में प्रभाव देखा गया।

गन्धक तैल द्वितीय का दद्रु पर कोई प्रभाव नहीं देखा गया।

गन्धक तैल तृतीय का पामा पर 100 प्रतिशत प्रभाव देखा गया।

रस शास्त्र – 27

नवजीवन रस का निर्माणात्मक एवं प्रभावात्मक अध्ययन (रसायन गुण परिज्ञान क्रम में)

अध्येता	:	डा. रमेश कुमार त्रिवेदी
निर्देशक	:	प्रो. लक्ष्मी नारायण शर्मा
सह–निर्देशक	:	डा. सन्तोष कुमार मिश्रा
1990	:	209

नवजीवन रस का रस शास्त्रीय एवं चिकित्सा ज्ञानात्मक अध्ययन ही महानिबन्ध का उद्देश्य है।

नवजीवन रस (रस योगसागर) का निर्माण कर 19 रसायन योग्य आतुरों को रसायन गुणोपलब्धि हेतु दिया गया। औषध का प्रयोग प्रथम 3 दिन तक स्नेहन स्वेदन एवं विरेचनार्थ एरण्ड तैल 10 मि.लि. की एक मात्रा रात्रि में देकर कराया गया। 250–250 मि.ग्रा. औषध प्रातः सायं दो बार मधु मिश्रित दूध से 30 दिन तक दी गयी।

रसायन सेवन के पश्चात् औसत हीमोग्लोबिन वृद्धि एक ग्राम प्रतिशत रही। रक्त अवसादन दर (ई.एस.आर.) में 3.6 मि.मी. की कमी हुई । देह भार में औसत वृद्धि 0.875 कि.ग्रा. रही । रसायन गुणोपलब्धि औसत 67 प्रतिशत रही।